Bhajan

CD-05

BOLO RAM

श्री राम शरणं वयं प्रपन्नाः।

बीत गये दिन भजन बिना रे

बीत गये दिन भजन बिना रे ।
भजन बिना रे, भजन बिना रे ॥

बाल अवस्था खेल गवांयो ।
जब यौवन तब मान घना रे ॥

लाहे कारण मूल गवांयो ।
अजहुं न गयी मन की तृष्णा रे ॥

कहत कबीर सुनो भई साधो ।
पार उतर गये संत जना रे ॥

गुरु चरनन में शीश झुकाले जनम सफल हो जायेगा

गुरु चरनन मे शीश झुकाले जनम सफल हो जायेगा
जन्म जन्म से भटक रहा है राम मिलन को तरस रहा है
करी कमाई नहीं पुण्य की तू क्या भेंट चढ़ायेगा
गुरु चरनन में शीश झुका ले

चहु दिश गहन अन्धेरा छाया पग पग भरमाती है माया
राम नाम की ज्योति जगेगी अन्धकार मिट जायेगा
गुरु चरनन में शीश झुका ले

गुरु आदेश मान मन मेरे ध्यान जाप चिंतन कर ले रे
जनम जनम के पाप कटेंगे मोक्ष द्वार खुल जायेगा
गुरु चरनन में शीश झुका ले

जन्म जन्म से भटक रहा है राम मिलन को तरस रहा है
गुरु दर्शन से बिन मांगे ही कृपा राम की पायेगा
गुरु चरनन में शीश झुका ले जनम सफल हो जायेगा

घूँघट का पट खोल रे

घूँघट का पट खोल रे,
तोहे पिया मिलेंगे ।

घट घट रमता राम रमैया,
कटुक बचन मत बोल रे ॥

रंगमहल में दीप बरत है,
आसन से मत डोल रे ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो,
अनहद बाजत ढोल रे ॥

नाम जपन क्यों छोड़ दिया

क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा,
सत्य बचन क्यों छोड दिया ॥
नाम जपन क्यों छोड़ दिया . . .

झूठे जग में दिल ललचा कर,
असल वतन क्यों छोड दिया ॥
नाम जपन क्यों छोड़ दिया . . .

कौड़ी को तो खूब सम्भाला,
लाल रतन क्यों छोड दिया ॥
नाम जपन क्यों छोड़ दिया . . .

जिन सुमिरन से अति सुख पावे,
तिन सुमिरन क्यों छोड़ दिया ॥
नाम जपन क्यों छोड़ दिया . . .

खालस इक भगवान भरोसै,
तन मन धन क्यों ना छोड़ दिया ॥
नाम जपन क्यों छोड़ दिया . . .

हरि तुम हरो जन की भीर

हरि तुम हरो जन की भीर ।

द्रौपदी की लाज राख्यो,
तुम बढ़ायो चीर ॥

भगत कारण रूप नर हरि,
धरयो आप सरीर ॥

हिरण्याकच्छपि मारि दीन्हों,
धरयो नाहिन धीर ॥

बूड़तो गजराज राख्यो,
कियो बाहर नीर ॥

दासी मीरा लाल गिरिधर,
दुख जहाँ तहाँ पीर ॥

हे गोविन्द राखो सरन

हे गोविन्द राखो सरन,
अब तो जीवन हारे ।

नीर पिवन हेतु गयो, सिन्धु के किनारे,
सिन्धु बीच बसत ग्राह, चरन धरि पछारे ॥
हे गोविन्द राखो सरन . . .

चार प्रहर युद्ध् भयो, ले गयो मझधारे,
नाक कान डूबन लागे, कृष्ण को पुकारे ॥
हे गोविन्द राखो सरन . . .
हे गोविन्द हे गोपाल

द्वारिका में शबद भयो, शोर भयो भारे,
शंख चक्र गदा पद्म गरुड़ तजि सिधारे ॥
हे गोविन्द राखो सरन . . .

सूर कहे श्याम सुनो, सरन हम तिहारे,
अबकि बेर पार करो, नन्द के दुलारे ॥
हे गोविन्द राखो सरन . . .

भज मन गोविंद गोविंद गोपाला ।

तुम तजि और कौन पै जाऊं

तुम तजि और कौन पै जाऊं ।
काके द्वार जाइ सिर नाऊं पर हाथ कहां बिकाऊं ॥

ऐसो को दाता है समरथ जाके दिये अघाऊं ।
अंतकाल तुम्हरो सुमिरन गति अनत कहूं नहिं पाऊं ॥

भवसागर अति देख भयानक मन में अधिक डराऊं ।
कीजै कृपा सुमिरि अपनो पन सूरदास बलि जाऊं ॥

रघुबर तुमको मेरी लाज

रघुबर तुमको मेरी लाज,
सदा सदा मैं शरण तिहारी,
तुम हो ग़रीब निवाज ॥
रघुबर तुमको मेरी लाज . . .

पतित उधारन विरद तिहारो,
श्रवन न सुनी आवाज,
हूँ तो पतित पुरातन कहिये,
पार उतारो जहाज ॥
रघुबर तुमको मेरी लाज . . .

अघ खण्डन दुख भंजन जन के,
यही तिहारा काज,
तुलसीदास पर किरपा कीजे,
भक्ति दान देहु आज ॥
रघुबर तुमको मेरी लाज . . .

राम बिनु तन को ताप न जाई

राम बिनु तन को ताप न जाई,
जल में अगन रही अधिकाई ॥
राम बिनु तन को ताप न जाई . . .

तुम जलनिधि मैं जलकर मीना,
जल में रहि जलहि बिनु जीना ॥
राम बिनु तन को ताप न जाई . . .

तुम पिंजरा मैं सुवना तोरा,
दरसन देहु भाग बड़ मोरा ॥
राम बिनु तन को ताप न जाई . . .

तुम सद्‌गुरु मैं प्रीतम चेला,
कहै कबीर राम रमूं अकेला ॥
राम बिनु तन को ताप न जाई . . .

राम, बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम।

राम नाम मुद मंगल कारी, विघ्न हरे सब पातक हारी,
राम, बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम।

पायो निधि राम नाम

पायो निधि राम नाम, सकल शांति सुख निधान ।

सिमरन से पीर हरे, काम, क्रोध, मोह जरे,
आनन्द रस अजर झरे, होवे मन पूर्ण काम ॥
पायो निधि . . .

रोम रोम बसत राम, जन जन में लखत राम,
सर्व व्याप्त ब्रह्म राम, सर्व शक्तिमान राम ॥
पायो निधि . . .

ज्ञान ध्यान भजन राम, पाप ताप हरन नाम,
सुविचारित तथ्य एक, आदि अंत राम नाम ॥
पायो निधि . . .

राम ही राम बस राम ही राम

राम ही राम बस राम ही राम ।
और नाही काहू सो काम ॥
राम ही राम ...

तन में राम तेरे मन में राम ।
मुख में राम वचन में राम ।
जब बोले तब राम ही राम ॥
राम ही राम ...

जागत सोवत आठहुँ याम ।
नैन लखें शोभा को धाम ।
ज्योति स्वरुप राम को नाम ॥
राम ही राम ...

कीर्तन भजन मनन में राम ।
ध्यान जाप सिमरन में राम ।
मन के अधिष्ठान में राम ॥
राम ही राम ...

सब दिन रात सुबह और शाम ।
बिहरैं मन मधुबन में राम ।
परमानन्द शान्ति सुख धाम ॥
राम ही राम ...